

**HALF-YEARLY EXAMINATION - 2013**  
**Second Language : Hindi**

Time: 2 1/2 Hrs.

PART A&B

Max. Marks : 100

**PART-A**

X Class

Max. Marks : 75

Time : 2 Hrs.

$6 \times 3 = 18$

- I. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 50 शब्दों में लिखिए।
  1. तुलसी ने नीच की तुलना सांप से क्यों की है?
  2. सूरराज के शस्त्र का नाम क्या है? वह किनकी हड्डियों से बनाथा?
  3. संस्कृति का तात्पर्य क्या है?
  4. कृष्ण और बलराम ने खेती महत्ता को कैसे बढ़ायी?
  5. राहुल को क्यों निराश होना पड़ता है?
  6. मन्माजी ने राणा प्रताप को कैसे बचाया?

(अथवा)

अ. एक भरोसो एक बल..... चातक तुलसीदास ||

आ. यह साँझ उषा का आँगन..... जीवन का ||
  
- II. किसी एक प्रश्न का उत्तर दस पंक्तियों में लिखिए। 10
  1. सुख-दुःख कविता का सारांश लिखिए।
  2. दुकरा दो या प्यार करो कविता का सारांश लिखिए।
  
- III. किसी एक प्रश्न का उत्तर 15 पंक्तियों में लिखिए 10
  1. सागर और मेघ से मानवजाति को कौन कौन से लाभ है?
  2. भारतीय संस्कृति की विशेषताओं को पन्द्रह पंक्तियों में लिखिए।
  
- IV. 1. आवश्यक पुस्तके माँगते हुए किसी पुस्तक विक्रेता के नाम पर पत्र लिखिए। 7

(या)

  2. किसी यात्रा का वर्णन करते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।
  
- V. किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए। 10
  1. राष्ट्रभाषा हिन्दी
  2. विद्यार्थी और अनुशासन
  3. दूरदर्शन
  4. समाचार पत्र

- VI. किसी एक प्रश्न का उत्तर पाँच वाक्यों में लिखिए।  
1. राहुल आकाश में क्यों घूमना चाहता है? 5  
(या)  
2. गान्धीजी के लिए कौन सी बाते असह्य थीं?
- VII. निम्न लिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए।  $3 \times 5 = 15$
1. जलियाँवाला बाग के हत्याकाण्ड का बदला किसने और कैसे लिया था?
  2. वृक्षों से मानव जाति को क्या लाभ हैं?
  3. नव वर्ष के रूप में कौन-कौन से त्यौहार मनाये जाते हैं?
  4. अल्लूरी सीतारामराजु को अपने बाल्यकाल में पढ़ाई में दिलचर्पी क्यों नहीं थी?
  5. मुहम्मद कुली कुतुबशाह के जीवन का सबसे मुख्य कार्य क्या था?
  6. आचार्य नागार्जुन का बौद्ध इतिहास में क्या महत्व है?

**HALF - YEARLY EXAMINATION - 2012**  
**PART-B**

1/2 hour.

25 Marks

$15 \times 1 = 15$  m

**सूचना** सही जवाब का अक्षर चुनकर कोष्टक में लिखिए।

1. संत लोग किसको ग्रहण करते हैं? ( )  
 अ. अवगुण      आ. बुराई      इ. गुण      ई. दूध
2. राजा हरिश्चन्द्र को तेजोभ्रष्ट करने की प्रतिज्ञा किसने की थी? ( )  
 अ. विश्वामित्र      आ. नारद      इ. इन्द्र      ई. दधीचि
3. कौन आर्य पिता और नागा कन्या से उत्पन्न संतान थे? ( )  
 अ. देवदत्त      आ. जनमेजय      इ. तक्षक      ई. आस्तिक मुनि
4. मीरा के पास विष का प्याला किसने भेजा ? ( )  
 अ. राजाजी      आ. रामेश्वरी      इ. राणाजी      ई. भीमरावजी
5. चुनाव में मतदान का अधिकार किस उम्र से होता है? ( )  
 अ. बारह      आ. उन्नीस      इ. अठारह      ई. बीस
6. भारतीयों की कृषि प्रधान संस्कृति में किसका महत्व है? ( )  
 अ. बैल का      आ. बकरी का      इ. गाय का      ई. हाथी का
7. राणा प्रताप कितने बार घायल हुए? ( )  
 अ. दो      आ. दस      इ. तीन      ई. सात
8. गाँधीजी को किस में अरुचि थी? ( )  
 अ. कबड्डी में      आ. व्यायाम में      इ. तैरने में      ई. खाने में
9. प्रकृति सौन्दर्य के चित्रण में बेजोड़ कवि कौन है? ( )  
 अ. पंतजी      आ. निराला जी      इ. गुप्तजी      ई. प्रसाद जी
10. गुप्तजी को ज्ञानपीठ पुरस्कार किस काव्य पर मिला? ( )  
 अ. चिदंबर      आ. साकेत      इ. रामचरितमानस      ई. यशोधरा
11. आज भारत की आबादी ..... करोड़ के ऊपर है। ( )  
 अ. 80      आ. 97      इ. 122      ई. 69
12. रहीम किसको वश में करने का उपदेश देते हैं? ( )  
 अ. मन को      आ. यश को      इ. धन को      ई. शरीर को

13. सेठ ने धनी बाप के बेटे को क्या दिया ? ( )  
 अ. एक रूपया      आ. एक पेटी      इ. एक मोहर      ई. दु अन्नी
14. पंचवर्षीय योजनाओं में किस को प्राथमिकता दी गयी है? ( )  
 अ. भूमि को      आ. जल को      इ. खेती को      ई. धन को
15. राणा के मर्स्तक से किसने राज चिह्नों को उतार कर स्वयं धारण करलिया? ( )  
 अ. मानसिंह ने      आ. शक्तिसिंह ने      इ. मन्नाजी ने      ई. औरंगजेब ने
- II. सूचनाओं के अनुसार उत्तर लिखिए।  $10 \times 1 = 10 \text{ m}$
16. स्तुति कैसे करूँ तुम्हारी ..... वाणी में चातुर्य नहीं। (पूर्ति कीजिए)
17. मैं चार महिने सूर्य को विश्राम देता हूँ?  
(भविष्यत् काल में लिखिए)
18. सिद्ध मानसिंह कुमंत्रण की थी होनेवाली।  
(सही क्रम में लिखिए)
19. 'धर्मावलंबी' (किन दो शब्दों से बना है?)  
..... + .....
20. मैं उनके स्वभाव ..... संतुष्ट हूँ।  
(सही कारक चिह्न रखिए)
21. वे गौर हिन्दुस्तानी थे ही नहीं।  
(रेखांकित शब्द का वचन बदलकर फिर से वाक्य लिखिए)
22. मैं अपने योग्य नहीं समझाता था।  
(इस वाक्य में विशेषण क्या है?)
23. मनुष्य अज्ञानी है।  
(विलोम शब्द लिखिए)
24. मानवीय  
(इस में कौन सा प्रत्यय है)
25. कोलाहल मचना  
(इस मुहावरे का अर्थ क्या है)

## जवाब

1. तुलसी ने नीच की तुलना सांप से क्यों की है?
- ज. कवि का परिचय: यह प्रश्न “तुलसी सुधा” नामक पाठ से दिया गया है। कवि “तुलसीदासजी” है।

विषय: तुलसीदास ने नीच की तुलना साँप से की है। क्यों कि सांप चन्दन के पेड़ से हमेशा लिपटे रहने पर भी अपना विष उगलने का स्वभाव नहीं छोड़ता। उसी प्रकार नीच भी सज्जनों के साथ स्नेह से रहने पर भी अपना नीचता नहीं छोड़ता। वह अपना सहज स्वभाव त्याग नहीं देता। इसलिए तुलसीदास सांप से नीच की तुलना की।

2. सुरराज के शस्त्र का नाम क्या है? वह किनकी हड्डियों से बना था?
- ज. पाठ का परिचय: यह प्रश्न सागर और मेघ नामक पाठ से दिया गया है। इसके लेखक श्री रायकृष्णदासजी हैं। यह वार्तालाप पाठ है।

विषय: सुरराज के शस्त्र का नाम वज्रायुध है। वह दधीचि मुनि की हड्डियों से बना था। वृत्तासुर नामक राक्षस ने इन्द्र को पराजित करके इन्द्रानी को अपनी दासी बनायी। वृत्तासुर का संहार करने के लिए दधीचि ने अपनी रीढ़ की हड्डी इन्द्र को दान में दी। इन्द्र ने उससे वज्रायुध बनाया और वृत्तासुर का संहार किया।

3. संस्कृति का तात्पर्य क्या है?
- ज. लेखक का परिचय: यह प्रश्न भारतीय संस्कृति नामक निबन्ध से दिया गया है। इसके निबंधकार श्री काका कालेलकर हैं।

विषय: संस्कृति का अर्थ है संस्कार या नागरिकता। किसी भी देश के आचार-विचार, रीति-रिवाज, वेष-भूषा, भाषाएँ, ललित कलाएँ, सामाजिक, धार्मिक नैतिक आदि विषयों को संस्कृति कहते हैं। संस्कृति अपने भविष्य पर द्रुष्टि रख कर चलती है। लोगों के नये विचारों के कारण संस्कृति में परिवर्तन होते रहता है। संस्कृति का संबंध भूतकाल और वर्तमान से भी रहता है।

4. कृष्ण और बलराम ने खेती की महत्ता को कैसे बढ़ायी?
- ज. पाठ का परिचय: यह प्रश्न “भारत में कृषि”, नामक निबन्ध पाठ से दिया गया है।
- विषय: हमारे देवता बलराम और श्रीकृष्ण कृषक जीवन बिताते थे। बलराम को लोग “हल धर” कहते थे और उनका आयुध “हल” था। भगवान श्रीकृष्ण गायों को चराते थे और उनका पालन-पोषण भी करते थे। इस प्रकार ये दोनों महापुरुष खेती की महत्ता बढ़ाई।

5. राहुल को क्यों निराश होना पड़ता है?

ज. कविता का परिचय: यह प्रश्न “राहुल की कल्पना” नामक पाठ से दिया गया है। उसके कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त हैं।

विषय: राहुल अपने आप में कल्पना कर लेता है कि काश मैं भी पक्षी की तरह आसमान में उड़कर जंगल के कोने कोने तक पहुंचकर पिता को ढूँढ़ लेता। उन्हे वापस घर लेकर आता। मगर राहुल के पास पक्षी की तरह पंख नहीं है। इसलिए उसे निराश होना पड़ा।

6. मन्नाजी ने राणा प्रताप को कैसे बचाया ?

ज. पाठ का परिचय: यह प्रश्न “विद्रोही” (कहानी) नामक पाठ से दिया गया है। इसके कहनीकार “विनोदशंकर” व्यास है।

विषय: मन्नाजी ने राणा प्रताप के मस्तक से उनके राज चिह्न को उतारकर स्वयं धारण कर लिया। मुगल सैनिकों को भ्रम में डालकर उन्हे अपनी और आकृष्ट किया। सैनिक उन्हे असली राणा समझकर उन पर टूट पड़े और मार डाला। इस बीच राणा प्रताप रणक्षेत्र से भाग निकले। इस तरह मन्नाजी ने एक महान् वीर को बचाने के लिए अपने प्राणों को त्याग दिया।  
या

अ. एक भरोसो, एक बल, एक आस विस्वास ।  
एक रामधनस्याम हित चातक तुलसीदास ॥

आ. यह सांझ उषा का आंगन  
आलिंगन विरह मिलन का,  
चिर हास अश्रुमय आनन  
रे इस मानव जीवन का ।

॥ सुख-दुःख कविता का सारांश लिखिए।

ज. कवि परिचय:

कवि : श्री सुमित्रानन्दन पंत

कविता का नाम: सुख-दुःख

जीवन काल: सन् 1900 ई में - सन् 1977 ई हुई।

वाद : छायावाद

भाषा : मधुर शब्द चयन

उपाधि-पुरस्कार : चिदंबरा पर ज्ञानपीठ पुरस्कार,

कृतियाँ: वीणा, पल्लव, ग्रंथी आदी।

कवि की विशेषता : प्रकृति चित्रण में बेजोड़ कवि ।

## सुख-दुःख कविता का सारांश:-

इस कविता में कवि जीवन में सुख-दुःख के बारे में बताता है। अति सुख और अति दुःख दोनों दुःखदायक है। इसलिए कवि निरंतर सुख या दुःख नहीं चाहता है। सुख-दुःख की आँख-मिचौनी से मनुष्य का जीवन आरंभ होता है। सुख-दुःख के मधुर मिलन से यह जीवन परिपूर्ण होता है। जैसे कभी बादल की आड़ में चाँद होता है, तो कभी चाँद की आड़ में बादल। अतिसुख या अति दुःख से लोग पीड़ित हैं।

जीवन में सुख-दुःख का एक के बाद एक आना अच्छा होता है। मानवजीवन वह आँगन है, जहाँ सुख रूपी प्रभात होता है और दुःख रूपी संध्या। मानव जीवन वह आलिंगन है, जहाँ सुख रूपी संयोग होता है और दुःख रूपी वियोग।

मानव जीवन वह चेहरा है, जो सुख रूपी हँसी प्रकट करता है और दुःख रूपी आँसू। इसके अलावा मानव जीवन और कुछ नहीं है।

- ॥. 2. “तुकरा दो या प्यार करो” कविता का सारांश लिखिए।

### ज. कवइत्रि का परिचय:

कवइत्रि : श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान

कविता का नाम : तुकरा दो या प्यार करो

जीवनकाल : जन्म सन् 1904 ई, मृत्यु सन् 1948 ई.

रचनाएँ: मुकुल, त्रिधारा, झाँसी की राणी।

प्रस्तुत कविता में उन्होंने बताया है कि भगवान की उपासना सच्चे हृदय से करने की भावना को स्पष्ट करती है।

सारांश:- कवइत्रि मंदिर में जाकर भगवान से निवेदन करती है कि हे भगवान ! कई उपासक तुम्हारी पूजा करने कई ढंग से आते हैं। वे धूम-धाम से आकर मुक्त-मणि जैसे कीमती चीजे अर्पित करते हैं।

मैं तो एक गरीबिनी हूँ। इसलिए अपने साथ कुछ भी नहीं ला सकी। फिर भी साहस करके पूजा करने मंदिर में आयी। साथ में पूजा की सामाग्री नहीं है। मन का भाव प्रकट करने मेरी वाणी में चातुर्य भी नहीं है। धूप-दीप नैवेद्य नहीं है। दान और दक्षिणा भी नहीं है। खाली हाथ चली आयी।

मैं पूजा की विधि भी नहीं जानती। सच्चे प्रेम से भरे अपना हृदय तुम्हारे चरणों में अर्पित करने आयी हूँ। यह वस्तु तो तुम्हारी ही है। तुम्हारी इच्छा है कि तुकरा दो या प्यार करो।

कविता की विशेषताएँ:- प्रस्तुत कविता में कवयित्रि ने यह दिखाया है कि - भगवान की उपासना सच्चे हृदय से की जानी चाहिए, न कि ठाट-बाट और आडंबरों से। भाषा सरल और सुबोध है। शीर्षक सार्थक बन पड़ा है।

- III. 3. सागर और मेघ से मानव जाति को कौन से लाभ है?

शीर्षक: सागर और मेघ (वार्तलाप)

ज. 'सागर और मेघ' पाठ के लेखक श्री रायकृष्णदास है। सागर और मेघ से मानव जाति को अनेक लाभ है।

### सागर से लाभ:

1. सागर का पानी खारा होता है। इससे नमक बनाते हैं।
2. सूरज की गर्मी से सागर का पानी भाप बनता है। यही भाप आकाश में बादल का रूप धारण करता है।
3. ऋतु बदलने पर वही भाप भरे बादल वर्षा के रूप में पानी बरसाता है।
4. गहरे समुद्र में अनमोल रत्न, मोति, पेट्रोलियम जैसे खनिज पदार्थ मिलते हैं।
5. सागर में मछलियाँ मिलती हैं। उन्हें मनुष्य अपने आहार के रूप में उपयोग करता है।
6. सागर से दलित लोगों के जीविकोपार्जन मिलता है।
7. समुद्र में जहाज और नावे चलते हैं। इससे बड़ा व्यापार होता है।
8. सागर सदा अपनी सीमाओं से रहकर संसार को बचाता है।

### मेघ से लाभ:

1. मेघ समुद्र के भाप से बनकर आकाश में घूमते हैं और पानी बरसाते हैं।
2. नदी, नाले, तालाब, कुएँ आदि सब भर जाते हैं।
3. वर्षा के पानी से पेड़-पौधों की सिंचाई होती है।
4. धरती पर चारों ओर हरियाली छा जाती है।
5. पशु-पक्षी और मनुष्यों को अत्यन्त उपयोगी पीने का पानी मिलता है।
6. किसान खेतीबारी करते हैं, देश धन-धान्य से संपन्न हो जाता है।
7. वर्षा के आते ही गर्मी का अन्त होता है।
8. मेघ वज्र गिराकर द्रुष्टों का दमन करता है।

इस प्रकार सागर और मेघ से मानव जाति को कई लाभ हैं।

2. भारतीय संस्कृति की विशेषताओं पर पन्द्रह पंक्तियों में लिखिए।

ज. शीर्षक: भारतीय संस्कृति (निबन्ध)

लेखक का परिचय: “भारतीय संस्कृति” निबन्ध के निबन्धकार “श्री काका कालेलकर जी” है।

विषय: भारतीय संस्कृति सब से बड़ी उदार संस्कृति है। उसने अनेक अन्य धर्मों को आत्मसाथ करलिया है। अनेक संस्कृतियों को मिला लिया। ईसाई और मुस्लिम संस्कृति यमुना और सरस्वती की तरह बहती है। विभिन्न धर्मों को मिलाकर एक विशाल धर्म कुटुंब बनने की क्षमता भारतीय संस्कृति में है। इसके अनुसार ईश्वर तक पहुँचने के अनेक मार्ग हैं। मानव कल्याण ही उसका एक मात्र आदर्श है। इसी आदर्श के फैलाने विश्व को अपना कार्यक्षेत्र बना लिया है। संक्षिप्त में भिन्नत्व में एकत्व भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता है। भारतीय संस्कृति में ईश्वर को माननेवाले आस्तिकों के लिए भी स्थान है, और न मानने वाले नास्तिकों के लिए भी स्थान है। भारतीय संस्कृति की यह परंपरा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। मानवता का अंतिम कल्याण ही भारतीय संस्कृति का आदर्श है। भारत देश उनका केन्द्र है, मध्यबिन्दु है और उनका कार्यक्षेत्र अखिल विश्व है।

4. आवश्यक पुस्तके माँगते हुए किसी पुस्तक विक्रेता के नाम पर पत्र लिखिए।

पुलिवेन्दुला

२०.११.२०१२.

प्रेषक:

दसवी कक्षा,

आ.प्र.सा.गु. विद्यालय,

पुलिवेन्दुला,

कडप जिला ।

सेवा में,

व्यवस्थापक,

पुस्तक विक्रेता विभाग,

हिन्दी प्रचार सभा,

हैदराबाद ।

माननीय महोदय,

विषय: पुस्तकों की खरीद ।

सादर प्रणाम ।

मैं दसवी कक्षा का विद्यार्थी हूँ। मुझे निम्न लिखित पुस्तकों की आवश्यकता है। अतः मेरे पते पर वि.पी.पी. के द्वारा यथा शीघ्र भेजने की कृपा करें। आपके नियमानुसार रु. 250/- अग्रिम राशी भेज रहा हूँ। उचित कामिशन की आशा करता हूँ।

क्रम.संख्या	पुस्तक का नाम	प्रतियाँ
१.	सुबोध हिन्दी व्याकरण	- 3
२.	राजहंस हिन्दी निबन्ध	- 5
३.	पद्य मंजरी	- 2
४.	रामायण	- 2
	कुल	- 12

सध्यवाद।

आपका विश्वासी,

× × × × ×

२. किसी यात्रा का वर्णन करते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।

पोरुमामिला,  
२०.१२.२०१२.

प्रिय मित्र धीरज

स्नेह नमस्कार । मैं यहाँ कुशल हूँ। मैं आशा करता हूँ कि तुम भी कुशल हो। मैंने अपनी पाठशाला की ओर से हैदराबाद की यात्रा की थी। उसके बारे में लिख रहा हूँ।

हैदराबाद एक ऐतिहासिक नगर है। मुहम्मद कुली कुतुबशाह ने इस नगर की नीव डाली। हैदराबाद में चारमिनार सालारजंग संग्रहालय, नेहरू जुवालाजिकल पार्क, नक्षत्रशाला, सचिवालय, बिलामंदिर, विश्वविद्यालय के भवन, गोलकोडा किला, रामोजी फिल्म सिटी आदि स्थान देखने लायक हैं।

बड़ा मजा आया। हो सके तो तुम भी एक बार हैदराबाद महानगर की यात्रा करो। घर में माता पिता को मेरा नमस्कार कह देना। बहिन को मेरा प्यार। पत्र लिखने की कोशिश करे।

तुम्हारा प्रिय मित्र  
विवेक

पता  
बोल्ल धीरज,  
15-225, नया नगर,  
पोरुमामिला,  
कडप जिला।

## राष्ट्र भाषा हिन्दी

**प्रस्तावना:** भारत एक विशाल देश है। इस में अनेक राज्य हैं। भारत में कई भाषाएँ बोली जाती हैं। तेलुगु, हिन्दी, तमिल, गुजराती, मराठी आदि। भारत सरकार ने 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी राजभाषा के रूप में घोषित किया। इसलिए हिन्दी हमारी भारत की राजभाषा और राष्ट्रभाषा है। इसकी लिपि देवनागरी है। भारत में 80 प्रतिशत से ज्यादा लोग हिन्दी जानते हैं और बोलते हैं।

### हिन्दी भाषा को राष्ट्र भाषा बनाने का कारण:

आजादी के बाद हमारे सामने यह प्रश्न उठा कि किस भाषा को राष्ट्र भाषा बनायी जाय। गाँधीजी ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया। इसके अनेक कारण हैं। अधिकतर राज्यों की जनता की मातृभाषा हिन्दी है। दक्षिण के अधिकांश लोग उसे समझते हैं। जिससे देश की एकता बढ़ती है। भारतीय संस्कृति की झलक दिखाई देती है। इसमें दूसरी भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करने का भण्डार है। हिन्दी बहुत सरल भाषा है। इसे सीखना बहुत आसान है। इसमें महान साहित्य का भण्डार है। जैसे तुलसीदास, सूरदास, प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद, हरिऔध, महादेवी वर्मा मैथिलीशरणगुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी आदि महान रचनाकार हिन्दी भाषा की शोभा बढ़ा रहे हैं।

### हिन्दी भाषा का प्रचार:

आन्ध्र, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, गुजरात आदि प्रदेशों में हिन्दी प्रचार का कार्य हो रहा है। अहिन्दी प्रदेशों में योग्य छात्रों को छात्र वृत्तियाँ दी जा रही हैं। केन्द्र सरकार के सब पत्राचार हिन्दी में होता है। भारत सरकार ने त्रिभाषा सूत्र को अमल किया। इसके अनुसार प्रान्तिया भाषा, हिन्दी और अंग्रेजी भाषाएँ सिखाई जा रही हैं।

हिन्दी सीखने से लाभ: विविध राज्य के बीच लोगों को आपस में मिलाने की शक्ति हिन्दी है। लोगों के बीच विचारों का आवान और प्रदान होता है। किसी भी राज्य में इस भाषा से अपने काम संपन्न कर सकते हैं। हिन्दी से देश की समग्रता की पहचान होती है।

उपसंहार:- हमें हिन्दी भाषा के प्रति प्रेम और आदर रखना चाहिए। “हिन्दी पढ़ो, देश की एकता को बढ़ाओ।” इस नारे के अनुसार राष्ट्रीय एकता का काम हिन्दी कर सकती है। देश की एकता और भावी नागरिकों के अनेक प्रयोजनों के लिए सभी राज्य त्रिभाषा सूत्र को अमल में लाते हुए हिन्दी का गौरव बढ़ाना चाहिए। हर एक को हिन्दी सीखने की आवश्यकता है।

## विद्यार्थी और अनुशासन

प्रस्तावना: नियमों के पालन को “अनुशासन” कहते हैं। मानव जीवन में अनुशासन का महत्व स्थान रहता है। विद्या का अध्ययन करनेवाला विद्यार्थी कहलाता है। अनुशासन दो शब्दों से बना है। अनु, शासन। अनु शब्द का अर्थ है अनुसरण करनेवाला और शासन शब्द का अर्थ है नियमबद्ध कार्य।

उद्देश्य: हरेक क्षेत्र में कायदे से नियमों का पालन करना ही अनुशासन माना जाता है। पाठशाला में गुरुजनों का और घर में बड़े-बूढ़ों की आज्ञाओं का पालन आदि अनुशासन ही है।

अनुशासन मानने से लाभ:- कर्तव्य का पालन करना, समय का सदुपयोग करना, सत्यप्रियता, प्रेम, परोपकार आदि उत्तम गुण पाते हैं।

1. अनुशासन के द्वारा विद्यार्थी की शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक शक्ति का विकास होता है।
2. जीवन में एक प्रकार की व्यवस्था आती है।
3. अनुशासन से विद्यार्थी सच्चा नागरिक बन जाता है।
4. परीक्षाओं में सफलता आसानी से मिलती है।
5. अनेक अच्छे गुणों का विकास होता है।

अनुशासन हीनता के कारण:

1. दूरदर्शन में और सिनेमाओं में दिखाये जानेवाले चोरी, डैकेती, अपराध संबंधी कार्यक्रमों का प्रभाव।
2. नशीले पदार्थों का सेवन।
3. पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव।
4. सहशिक्षा।

उपसंहार:- जो विद्यार्थी अपने जीवन को सुखमय बनाना चाहता है। उसे उपरोक्त बातों से दूर रहना है और अनुशासन को मानना चाहिए। विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है।

## दूरदर्शन

प्रस्तावना:- आज के मनोरंजन के साधनों में दूरदर्शन का स्थान सर्वप्रथम है। सारे विश्व में इसका अधिक प्रसार हो गया है। यह साधन रेडियो और सिनेमा का काम एक साथ करता है।

दूरदर्शन का अर्थ:- दूरदर्शन को टेलिविजन भी कहते हैं। टेली का अर्थ दूर और विजन का अर्थ है प्रतिबिंब। जिस यंत्र की सहायता से दूर-दूर के द्रुश्यों को जहाँ-चाहे वहाँ देखना ही “दूरदर्शन” कहते हैं।

अधिकार: अमेरीका वैज्ञानिक जॉन लांगी बेयर्ड ने दूरदर्शन का आविष्कार किया था। क्यांबेल, स्विंटन आदि कई वैज्ञानिकों के लागतार परिश्रम से दूरदर्शन को 1927 को एक अच्छा रूप मिला।

दूरदर्शन का उपयोग:- दूरदर्शन का उपयोग जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में होने लगा है। दूरदर्शन मनोरंजन का प्रमुख साधन है। शिक्षा विज्ञान, व्यापार, खेल जगत, भूगोल, इतिहास आदि विषयों की जानकारी हमें दूरदर्शन देता है। किसानों, व्यापारियों, छात्रों तथा ग्रामीण लोगों के लिए भी दूरदर्शन से प्रसारित कार्यक्रम उपयोगी होते हैं। दूरदर्शन में दहेज, प्रथा, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार आदि बुराइयों को दूर करने के कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं।

दूरदर्शन से लाभ:-

दूरदर्शन में समाचार, वाद-विवाद, खेल, कृषि विज्ञान, सिनेमा, नाटकाएँ, नृत्य-गीत-संगीत आदि सुन और देख सकते हैं। व्यापार क्षेत्र में तो इसका योगदान महत्वपूर्ण है। हर प्रकार के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी शिक्षा कार्यक्रम प्रसारित होते हैं।

दूरदर्शन से हानियाँ:-

1. लोग अपने कामों को छोड़कर कार्यक्रम देखने में अधिक समय बिताते हैं।
2. छात्र भी अपना बहुमूल्य समय दूरदर्शन के पास बैठकर बिताते हैं। उससे पढ़ाई में बाधा आती है।
3. आँखों का बुरा प्रभाव पड़ता है।

उपसंहार:- दूरदर्शन का प्रसार अब सभी गाँवों में तेजी से हो रहा है। दूरदर्शन में इस तरह के कार्यक्रम प्रसारित किए जाए-जिससे विद्यार्थियों को पढ़ाई में नुकसान न हो। राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक विकास में सहायक सिद्ध हों।

## समाचार पत्र

प्रस्तावना:- जिस पत्रिका से दुनिया के सभी प्रान्तों के समाचार मालूम होते हैं उसे समाचार पत्र या अखबार कहते हैं। सोलहवीं शताब्दी में समाचार पत्र का जन्म हुआ। भारत का पहला अखबार “इंडियन जगट” है।

समाचार पत्रों के प्रकार:- समाचार पत्र कई प्रकार के होते हैं। भारतीय भाषाओं में दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं। इनमें दैनिक समाचार पत्रों की बड़ी माँग है।

समाचार पत्र की उपयोगिता:- सरकार और जनता के बीच में समाचार पत्र जल बाँध की तरह काम करता है। इसे लोक वाणी भी कहा जाता है। संसार के सभी प्रांतों में समाचार पत्रों के द्वारा समाचार शीघ्र ही पहुँचता है। समाचार पत्रों में राजनीति, शिक्षा, साहित्य, खेल-कूद, व्यापार, चल-चित्र, विज्ञान

आदि के विषय होते हैं। रोजगार पाने के लिए समाचार पत्र उत्तम साधन है।

समाचार पत्रों से लाभ:-

१. दैनिक समाचार पत्रों में राजनीति, समाज और विज्ञान संबंधी सुन्दर लेख प्रकाशित होते हैं।
२. सुन्दर कहानियाँ और धारावाहिक उपन्यास भी प्रकाशित होते हैं।
३. नई कहानियाँ, नई कविताएँ और बाल साहित्य से मनोरंजन प्राप्त होता है।
४. समाचार पत्रों से विभिन्न त्योहारों, मंदिरों तथा महापुरुषों के महत्व का भी पता चलता है।
५. इसमें चलचित्र, भविष्यवाणी, मौसम आदि अनेक जानकारियाँ प्राप्त होती हैं।
६. समाचार पत्र हमें मार्गदर्शन करते हैं।

उपसंहार:- अंधकारमय जीवन में समाचार पत्र दीपक के समान है। मन बहलाव और ज्ञान-विज्ञान के समाचार पत्र बहुत उपयोगी सिद्ध होते हैं। मानव जीवन में समाचार पत्र महत्वपूर्ण साधन है। हर एक विद्यार्थी को प्रतिदिन समाचार पढ़ना जरूरी है।

VI. 1. राहुल आकाश में क्यों धूमना चाहता है?

ज. कवि परिचय:- यह प्रश्न “राहुल की कल्पना” नामक पाठ से दिया गया है। उसके कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त जी है।

विषय:- गौतम बुद्ध सिद्धि प्राप्त करने के उद्देश्य से अपनी पत्नी और पुत्र को सोते छोड़कर वन में चलेजाते हैं। माँ का दुःख दूर करने के लिए राहुल पिता को वापस बुला लाना चाहता है। इस के लिए वह पक्षियों की तरह पंख पाकर आकाश में धूमना चाहता है।

2. गाँधीजी के लिए कौन सी बाते असह्य थी?

ज. लेखक परिचय: यह प्रश्न “मेरा छात्र जीवन” नामक पाठ से दिया गया। यह एक “आत्मकथा” है। इसके लेखक महात्मा गाँधीजी है।

विषय:- गाँधीजी अपने को बहुत योग्य नहीं समझते थे। इसलिए इनाम या छात्रवृत्ति मिलती तो उन्हे आश्चर्य होता। परन्तु अपने आचरण का उन्हे बड़ा ख्याल रहता था। सदाचार में यदि चूक होती तो उन्हे रोना आ जाता था। यदि उसने कोड़ि ऐसा काम हो जाता कि जिस के लिए शिक्षक को उलाहना देना पड़े, वह उन्हे असह्य हो जाता।

VII जलियाँवाला बाग के हत्याकाण्ड का बदला किसने और कैसे लिया?

ज. पंजाब के अमृतसर नगर में जलियाँवाला बाग में रविवार 13 अप्रैल 1919 को एक भयंकर नर

संहार हुआ। उस नरसंहार में बचने वालों में 19 वर्ष का ऊधमसिंह भी एक था। उसने इस भीषण हत्याकाण्ड का बदला लेने की प्रतिज्ञा की। 21 साल के बाद उसने लंडन के कैक्सटन हाल में अपनी पिस्तौल से छः गोलियाँ चलाकर माइकेल ओडवायर को मार डाला। इस तरह ऊधमसिंह ने इस हत्याकाण्ड का बदला ले लिया। जनरल डायर तो उसके पहले ही मर गया।

२. वृक्षों से मानव जाति को क्या लाभ हैं?
  - ज. वृक्षों से मानव को अनेक लाभ हैं। वे मानव के परम मित्र हैं।
  १. वृक्ष सदा मानव की सेवा करते हैं।
  २. वृक्ष हमें मीठे फल देते हैं।
  ३. वृक्ष छाया, फल, फूल और लकड़ी देती है।
  ४. वृक्ष प्रकृति की अक्षय संपदा है।
  ५. वृक्षों से वातावरण में संतुलन बना रहता है।
  ६. वृक्षों से प्राणवायु मिलती है।
  ७. वृक्ष ऋग्वेदों का नियंत्रण करती है।
  ८. वृक्षों की जड़ी-बूटियों से दवाइयाँ तैयार की जाती हैं।
३. नव वर्ष के रूप में कौन कौन से त्योहार मनाये जाते हैं?
  - ज. सभी देशों में नव वर्ष मनाने का आचार है। भारत के सब लोग अपने-अपने ढंग से नव वर्ष मनाते हैं।
    १. संसार भर में जनवरी पहली तारीख को नव वर्ष न्यू इयर के रूप में मनाते हैं।
    २. आन्ध्र, कर्णाटक और तमिलनाडु में उगादी के रूप में नव वर्ष मनाते हैं।
    ३. महाराष्ट्र में गुडी पाडवा के रूप में मनाते हैं।
    ४. पंजाब में बैसाखी और असाम में बिहु के नाम से नव वर्ष मनाते हैं।
    ५. केरला में ओणम् के नाम से मनाते हैं।
    ६. नवरोज पारसियों का नववर्ष है।
  ४. अल्लूरि सीतारामराजु को अपने बाल्यकाल में पढ़ाई में दिलचस्पी क्यों नहीं थी?
  - ज. सीतारामराजु के पिता वैंकटरामराजु एक सच्चे देश भक्त थे। पिताजी की मृत्यु के बाद वह अपनी माँ तथा भाई-बहन के साथ चाचा के घर आया। वे अंग्रेज शासन में बड़े अफसर थे। चाचा ने उसे हाई-स्कूल में भर्ती करा दिया। राजु के दिल में देश-प्रेम की भावना लहरा रही थी। इसलिए

उसकी दिलचस्पी पड़ाई की अपेक्षा युद्ध कला में अधिक थी। इस कारण युद्ध कलाएँ सीखने में अधिक समय बिताता था।

५. मुहम्मद कुली कुतुबशाह के जीवन का सब से मुख्य कार्य क्या था?
- ज. मुहम्मद कुली कुतुबशाह इब्रहीम कुली कुतुबशाह का पुत्र था। सन् 1581 ई में पिता की मृत्यु के बाद मुहम्मद कुली कुतुबशाह चौथा बादशाह बन गया। वह एक शासक था। उन्होंने अपनी प्रेयसी भागमती के नाम पर भाग्यनगर की नीव डाली। विवाह के बाद भागमती को हैदरमहल का खिताब दिया गया हैदरमहल नाम से नगर का नाम भाग्यनगर से हैदरबाद हो गया। गोलकोण्डा से राजधानी हैदरबाद लाई गई।
६. आचार्य नागार्जुन का बौद्ध इतिहास में क्या महत्व है?
- ज. आचार्य नागार्जुन प्रसिद्ध बौद्ध भिक्षु थे। उन्होंने नागार्जुन कोण्डा पर अपना विद्यापीठ बसाया। उन्होंने नलंदा के बौद्ध विश्वविद्यालय में शिक्षा पायी। बौद्ध भिक्षु बनकर उन्होंने भारत के रथलों का भ्रमण किया। इन से प्रभावित होकर शातवाहन वंश के सम्राट यज्ञश्री ने उन के लिए श्री पर्वत पर विशाल संघाराम बनवा दिया। इसी बौद्ध विद्यापीठ के आचार्य होकर नागार्जुन ने संसार को विज्ञान की शिक्षा देने शुरू की तभी से श्री पर्वत नागार्जुन कोण्डा के नाम से विख्यात है।

**Key Part-B**

1. इ
2. अ
3. ई
4. इ
5. इ
6. अ
7. ई
8. आ
9. अ
10. ई
11. इ
12. ई
13. ई
14. इ
15. इ
16. स्वर में माधुर्य नहीं मन का भाव प्रकट करने को
17. मैं चार महिने सूर्य को विश्राम दूँगा ।
18. मानसिंह की कुमंत्रण सिद्ध होनेवाली थी।
19. धर्म + अवलंबी
20. से
21. वह गैर हिन्दुस्तनी था ही नहीं।
22. योग्य
23. मनुष्य ज्ञानी है
24. ईय
25. हाहाकार मच जाना।

Prepared by  
BOLLU RAMA MOHAN  
APSERS Jr. College,  
Pulivendula,  
YSR Kadapa (Dt)  
M: 9494684876